CHAPTER 5, गलता लोहा

PAGE 65, प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:1

1. कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का ज़िक्र आया है।

उत्तर: एक दिन जब मास्टर त्रिलोक सिंह ने धनराम से तेरह का पहाड़ा पूछा तो धनराम पहाड़ा नहीं बता पाया । गुस्से में मास्टर त्रिलोक सिंह ने अपने जुबान के चाबुक का इस्तमाल किया और कहा कि जिस दिमाग में लोहा भरा हुआ हो उसमें विद्या का ताप नहीं पहुँच सकता । गरीब होने के कारण धनराम के पिता उसको विद्या का ताप प्रदान करने में असमर्थ थे । यही कारण था कि जैसे ही धनराम बालिग हुआ, उसके पिता ने उसे धौंकनी फूंकने और सान लगाने जैसे काम करना शुरू कर दिया । उसके बाद उसके पिता उसे हथौड़ा और घन चलाने कि विद्या में पारंगत बनाने लगे ।

पाठ में इन्हीं स्थानों पर किताबों की विद्य और घन चलाने की

www.dreamopper.in

विद्या का ज़िक्र किया गया है ।

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:2

2. धनराम मोहन को अपना प्रतिदंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर:

(क) बचपन में ही धनराम को यह बताया गया कि वह नीची जाति का है।

(ख) मोहन कक्षा में सबसे होशियार था,जिस कारण उसे कक्षा का मॉनिटर बना दिया गया था।

(ग) मास्टर जी कहते थे कि मोहन एक दिन बड़ा आदमी बनेगा जिस से उनका और इस विद्यालय का नाम रोशन होगा।

(घ) धनराम को भी मोहन से बहुत आशाएं थी।

अतः इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंदी नहीं समझता था।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:3

3. धनराम को मोहन के किस व्यवहार पर आश्चर्य होता है और

क्यों?

उत्तर: बचपन से ही जाति-भेद और ऊँच-नीच के भाव में पला-बढ़ा धनराम जानता था कि मोहन एक ब्राह्मण जाति से हैं। उनके गाँव में ब्राह्मणों को कारीगरों के साथ बैठना उचित नहीं माना जाता था। उन्हें बैठने के लिए कहना अपमानजनक माना जाता है। धनराम को आश्चर्य हुआ कि मोहन काम ख़त्म होने के बाद भी उसकी दुकान पर बैठा था। वह और आश्चर्यचकित हो गया जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लिया और लोहे पर प्रहार किया और धौंकनी फूंकते हुए भट्ठी में लोहे को गरम किया। इसके बाद लोहे को गोल रूप दिया। धनराम मोहन की कार्यकुशलता से ज्यादा उसके व्यवहार से प्रभावित था। वह सोच रहा था की मोहन ब्राह्मण खानदान का होने के बावजूद अपनी जाति भुलाकर निम्न जाति वाले के साथ बैठा है और काम में सहयोग कर रहा है।

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:4

4. मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके

www.dreamtopper.in

जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

उत्तर: मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय इसलिए कहा है क्योंकि यहाँ आकर उसका जीवन सामान्य पथ पर चलने लगा था। बड़ा अफसर बनने का उसका सपना अब आकाश खो गया था। सुबह से शाम तक नौकरों की भांति काम करता था। उसके अंदर का मेधावी छात्र कब यहाँ हर किसी का नौकर बन गया उसे पता भी नहीं चला। नए वातावरण और काम के बोझ से के कारण उसकी सारी प्रतिभा कुंठित हो गयी। उसके द्वारा देखि गयी उज्जवल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसने कल-कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाया परन्तु उसे कहीं कोई काम नहीं मिला।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:5

5. मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान की चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर: धनराम के तेरह का पहाड़ा नहीं सुना पाने पर मास्टर त्रिलोक सिंह ने धनराम को व्यंग्य करते हुए कहा कि “तेरे दिमाग में तो लोहा भरा हुआ है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?” लेखक ने मास्टर त्रिलोक सिंह के व्यंग्य-वचनों को जुबान की ‘चाबुक’ कहा है। वह कहते हैं कि चमड़े का चाबुक तो शरीर पर चोट करता है परन्तु जुबान का चाबुक सीधा ह्रदय पर चोट करता है। यह चोट कभी ठीक नहीं हो पाती । मास्टर त्रिलोक सिंह के व्यंग्य-वचनों ने धनराम के ह्रदय पर चोट किया, जिसके कारण उसका मनोबल ऐसा गिरा की वह आगे पढ़ नहीं पाया । पढ़ाई छोड़कर वह अपने पुश्तैनी काम में लग गया।

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:6

6.1 बिरादरी का यही सहारा होता है।

1. किसने किससे कहा?

2. किस प्रसंग में कहा?

3. किस आशय से कहा?

4. क्या कहानी का आशय में यह स्पष्ट हुआ है?

www.dreamtopper.in

उत्तर:1

(क) ऊपर लिखा वाक्य पंडित वंशीधर ने अपने समुदाय के रमेश नामक युवक से कहा ।

(ख) वंशीधर अपने बेटे की आगे की पढ़ाई को ले कर चिंता में थे । इस बात पर रमेश ने सहानुभूति व्यक्त किया और वंशीधर के बेटे को अपने साथ लखनऊ ले जाने कि बात कही। अपनी कृतज्ञता जताते हुए, पंडित वंशीधर ने यह बात कही ।

(ग) ऊपर लिखी पंक्ति को पंडित वंशीधर ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा । उनके इस वाक्य का आशय था कि बिरादरी के लोगों को वक्त आने पर एक-दूसरे के काम आना चाहिए ।

www.dreamtopper.in

(घ) नहीं, इस कहानी में उपर्युक्त वाक्य का आशय बिलकुल स्पष्ट नहीं हुआ है । इसका कारण यह है कि जिस आशा से पंडित वंशीधर ने अपने बेटे को अपने बिरादरी के युवक रमेश के साथ लखनऊ भेजा, वो पूरा नहीं हुआ । वंशीधर ने अपने

बेटे को आगे की पढ़ाई के लिए लखनऊ भेजा था परंतु रमेश ने लखनऊ में वंशीधर के बेटे को अपने घर का नौकर बना दिया ।

6.2 उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी - कहानी के इस वाक्य -

1. किसके लिए कहा गया है?

2. किस प्रसंग में कहा गया है?

3. यह पात्र विशेष के किन चारित्रिक पहलुओं को उजागर करता है?

www.dreamtopper.in

उत्तर:

(क) उपरोक्त वाक्य मोहन के लिए कहा जाता है।

(ख) जब मोहन धनराम की भट्टी में बैठता है और घुमावदार आकृति में लोहे की एक मोटी छड़ बनाता है, तब उसकी आँखों में किसी सृजक की चमक दिखाई पड़ती है।

(ग) यह मोहन की विशेषता को उजागर करता है कि वह जाति को व्यवसाय से नहीं जोड़ता है और अपने मित्र की मदद

करके उदारता भी दिखाता है।

PAGE 65, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविताके आसपास:1

7. गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन संघर्ष में क्या फ़र्क है? चर्चा करें और लिखें।

उत्तर: गाँव और शहर दोनों में मोहन के चल रहे जीवन-संघर्ष में बहुत अंतर नहीं है। गाँव में उसे गरीबी, पुनर्जीवन और प्राकृतिक बाधाओं से जूझना पड़ता है। शहर में वह पूरे दिन नौकरों की तरह काम करता है। उसका दाखिला मामूली स्कूल में करवा दिया जाता है और उसे पढ़ने का मौका भी नहीं दिया जाता है।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविताके आसपास:2

8. एक अध्यापक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है? अपनी समझ में उनकी खूबियों और खामियों

पर विचार करें।

उत्तर: एक शिक्षक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व अच्छा कहा जाएगा। वह एक पारंपरिक शिक्षक है जो बिना किसी की मदद के पूरे स्कूल को चलाने और बनाए रखने में सक्षम है। एक अच्छे शिक्षक की तरह बच्चों को पढ़ाना और जरूरत पड़ने पर बच्चों को अनुशासित करते हुए उन्हें सजा भी दी जाती है। इस सब के बाद भी उन्हें एक पूर्ण शिक्षक नहीं कहा जा सकता है। क्यूंकि एक बच्चे से लगाव उसकी जाति के आधार पर निर्भर करता है। उनके मन में जातिगत भेदभाव की भावना थी, इसलिए वे मोहन जैसे उच्च कुलीन बच्चे से अधिक स्नेह करते थे, और धनराम जैसी निचली जाति के बच्चे से "दिमाग में लोहा भरा है"जैसे कटु शब्द कहते थे। उनकी ये बातें शिक्षक पर शोभा नहीं देती है।

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:3

9. गलत लोहा कहानी का अंत एक खास तरीके से होता है। क्या इस कहानी का कोई अन्य अंत हो सकता है? चर्चा करें।

www.dreamtopper.in

उत्तर: "गलता लोहा" कहानी का अंत पाठक को सोचने लिए मजबूर कर देता है। कहानी का अंत यह स्पष्ट नहीं करता है कि मोहन ने केवल सृजन के आनंद का अनुभव किया या अपने कृषि व्यवसाय में वापस आ गया या धनराम का पेशा अपना लिया।

इस कहानी का अंत इस प्रकार हो सकता है की यह परिस्थितियां देखने के बाद मास्टर त्रिलोक सिंह सभी को बताते कि यदि माता-पिता और शिक्षक के होते हुए यदि बच्चे भटकें तो दोष उन तीनों का है। शिक्षकों को अपने सभी शिष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

www.dreamtopper.in

PAGE 66, प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात :1

1. पाठ में निम्नलिखित शब्द लौहकर्म से संबंधित है। किसका क्या प्रयोजन है। शब्द के सामने लिखिए -

धौंकनी, दराँती, सँड़सी, आफर, हथौड़ा।

उत्तर:

1. धौंकनी : यह आग को सुलगाने और दहकाने के काम में आती है।
2. दराँती : यह खेत में घास या फसल काटने का काम करती है।
3. संड़सी : यह कैंची की तरह दिखती है और ठोस वस्तु को पकड़ने के काम आती है।
4. आफर : भट्ठी या लुहार की दुकान।
5. हथौड़ा : ठोस वस्तु पर चोट करने का औज़ार जो लोहे को कूटने-पीटने के काम आता है।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात :2

2. पाठ में काट-छाँटकर जैसे कई संयुक्त क्रिया शब्दों का प्रयोग हुआ है कोई पाँच शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:

1. थका-मांदा : मैं थका-मांदा बिना शिकार लिए ही शिविर तक पहुंचा।
2. घूम-फिरकर : मैंने घूम-फिरकर शिविर के चारों तरफ देखा।
3. उलट-पलटकर : मेरे पीछे किसी ने आकर सबकुछ उलट-पलटकर रख दियाथा।
4. उठा-पटककर : मुझमें इतना उठा-पटककर सबकुछ व्यवस्थित करने की ताक़त अभी तो नहीं थी।
5. पढ़-लिखकर : मुझे तो जो भी हासिल हुआ है वोपढ़-लिखकर ही हुआ है।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात :3

3. बूते का प्रयोग पाठ में तीन स्थानों पर हुआ है उन्हें छाँटकर लिखिए और जिन संदर्भों में उनका प्रयोग है, उन संदर्भों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

(क) बूढ़े वंशीधर के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा।

सन्दर्भ : लेखक स्पष्ट करना चाहते हैं कि वृद्धावस्था के कारण, खेती का काम अब वंशीधर के नियंत्रण का विषय नहीं है, वह अब यह सब नहीं कर सकता।

(ख) दान-दक्षिणा के बूते पर वे किसी तरह परिवार का आधा पेट भर पाते थे।

सन्दर्भ : लेखक वंशीधर की दयनीय स्थिति के साथ-साथ पुरोहिती पेशे की निरर्थकता का वर्णन करता है।

(ग) सीधी चढ़ाई चढ़ना पुरोहित के बूते की बात नहीं थी।

सन्दर्भ : वंशीधर बूढ़ा हो गया, जिसके कारण वह पुजारी के रूप में काम करने में सक्षम नहीं था।

www.dreamtopper.in

11:1:5:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात :4

4. मोहन! थोड़ा दही तो ला दे बाज़ार से।

मोहन! ये कपड़े धोबी को दे तो आ।

मोहन! एक किलो आलू तो ला दे।

ऊपर के वाक्यों में मोहन को आदेश दिए गए हैं। इन वाक्यों में आप सर्वनाम का इस्तेमाल करते हुए उन्हें दुबारा लिखिए।

उत्तर:

1. तुम थोड़ा दही तो ला दो बाज़ार से ।
2. तुम ये कपडे धोबी को दे तो आओ।
3. तुम एक किलो आलू तो ला दो।

www.dreamtopper.in